कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान

वार्षिक कार्य विवरण (सामाजिक उत्थान में सहभागिता) 2020–2021

1. **वर्षा जल का सिंचाई के कुंआ में रीचार्ज :** सिंचाई के लिए पानी की कमी को देखते हुए वर्षा जल खेती के लिए अमृत के समान है। पिछले कुछ वर्षों में स्थानीय स्तर पर वर्षा के पानी के बहाव को सिंचाई के कुंओं में पुर्नभरण का कार्य किया जा रहा है। यह कार्य काफी लाभदायक सिद्ध हो रहा है। किसानों द्वारा इसका स्वागत किया जा रहा है। समीक्षा वर्ष 2020–2021 में यह मुख्य कार्यक्रम रहा। यह कार्य सामान्यतः रबी की फसल कटने के बाद अप्रैल से जुलाई के बीच किया जाता है। इस वर्ष 22 कुंओं पर वर्षा जल पुर्नभरण कार्य पूरा किया गया। इस कार्य के लिए बजाज आटो लि., पुणे और एस.जे.एस. एन्टरप्राईजेज, बैंगलोर से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है। तीन वर्ष का यह कार्यक्रम इस वर्ष 2020–21 में पूरा कर लिया गया है। कार्य पूर्ण कर आर्थिक व्यय एवं खेत पर पड़ने वाले प्रभाव संबंधी रिपोर्ट बजाज आटो लि. के पास भेजा जा चुका है। प्रसन्नता की बात है कि उन्होंने कार्य की सराहना की है – उनके प्रतिनिधि ने क्षेत्र का अवलोकन भी किया।

2. **ईट भट्टों पर कार्य कर रहे विस्थापित परिवार के बच्चों की शिक्षा** – यह कार्य पिछले कई वर्षों से ''आशा'' (सं.रा. अमेरिका) के आर्थिक सहयोग से चल रहा है। इसे ''आशा'' संस्था के सहयोग से चाकसू क्षेत्र में तथा सांगानेर–फागी मार्ग पर भारत की कम्पनी **एस. जे.एस. एन्टरप्राईजेज** के सहयोग से चलाया जा रहा है। इस कार्य में जयपुर के श्री विशाल शर्मा का सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

वर्ष 2020–21 देश में कोरोना जैसी बीमारी का विस्तार एवं भय रहा। इसका प्रभाव इस कार्यक्रम पर पड़ा। परिणाम स्वरूप 2020 में शिक्षा कार्य जल्दी बन्द करना पड़ा क्योंकि ईट बनाने का कार्य भी बन्द हो गया। यह जानकारी देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि कोरोना संकट काल में ईट भट्टे के मालिक एवं कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान ने श्रमिकों को मदद की है। समीक्षा वर्ष में चाकसू एवं फागी क्षेत्र में कुल 19 ईट भट्टों के 729 बालक–बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा दी गयी जो सामान्यतः 5वीं कक्षा तक की है। इस कार्य में तकनीकी जानकारी प्रशिक्षण एवं पाठ्य सामग्री प्रथम संस्था से प्राप्त हुई।

बालकों को ध्यान का अभ्यास – ईट भट्टे पर रहने एवं पढ़नेवाले बच्चों एवं शिक्षकों के लिए अल्पकालीन विपश्यना शिविर का आयोजन किया गया। शिक्षकों का एक दिन का एवं विद्यार्थियों का 15 मिनट का ध्यान एवं मौन रहने का अभ्यास कराने का क्रम प्रारंभ किया गया। इस कार्य में जयपुर विपश्यना बाल शिक्षकों का मार्गदर्शन एवं शिक्षक के रूप में सहयोग मिल रहा है। यह अभ्यास पढ़ने में ध्यान केन्द्रित करने की दृष्टि से उपयोगी है।

3. **<u>कोरोना संकट में सेवा कार्य</u>** – कोरोना संक्रमण बीमारी में लाखों की संख्या में श्रमिक एवं असहाय लोगों को विस्थापित होना पड़ा। हजारों कि.मी. भी पैदल घर जाना पड़ा। संस्थान ने मित्रों एवं ग्रामीणों के सहयोग से चाकसू, शिवदासपुरा हाईवे के विभिन्न स्थानों पर भोजन, निवास, मार्ग व्यय, दवा आदि की व्यवस्था की गई। इस कार्य में मित्रों से रू. 1,25,000 का आर्थिक सहयोग मिला।

4. **<u>बा–बापू विचार प्रचार</u>** – बा–बापू 150 वर्ष कार्यक्रम एक वर्ष अधिक समय तक चलाने के निर्णय को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण क्षेत्र के कार्यकर्ताओं ने चर्चा एवं बैठकों में बा–बापू के जीवन के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी। ग्राम विकास के उनके विचारों से अवगत भी कराया। वैसे तो यह सतत चलनेवाला वैचारिक कार्य है।
5. **<u>असहाय लोगों को सरकारी लाभ मिलने के कार्यक्रम में सहयोग</u>** – पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्था के ''ई–मित्र'' कार्यकर्ता ने गांव–गांव एवं घरों में जाकर असहाय, असमर्थ, जानकारी नहीं रख पानेवाले असमर्थ पुरूष–महिला ''ई–मित्र'' के माध्यम से सरकार से मिलनेवाली आर्थिक सुविधा एवं सामाजिक, स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम से लाभांवित होने में वैधानिक कानून प्रक्रिया को पूरा किया गया। इस समीक्षा वर्ष में कोरोना

बीमारी के कारण कार्य की गति धीमी रही। इस अवधि में 783 व्यक्तियों को रू. 75,68,368/– के लाभ की स्वीकृति दिलायी गयी। इनका आर्थिक लाभ सरकार की ओर से सीधे उनके बैंक खाते में जमा हो जाती है।

6. **निवाई स्थित – लक्ष्मी निधि सहकारी समिति** – समिति का कार्य पूर्ववत चलता रहा। कोरोना के कारण बैठकें कम हुई। इस अवधि में कर्ज का उपयोग मुख्यतः खेती, बीमारी, बच्चों के लिए मोबाइल (ऑनलाइन) में होता पाया गया।
7. **महिला दिवस कार्यक्रम** – यह कार्यक्रम दिनांक 13 और 18 मार्च को आयोजित किया गया। चाकसू (गरूड़वासी) एवं निवाई में आयोजित इस कार्यक्रम में सैकड़ों महिलाओं ने भागीदारी निभाई। चर्चा का मुख्य मुद्दा स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला समूह गठन, बाल विवाह आदि रहा। इस कार्य में जयपुर से महिलाओं का जाना हुआ जिन्होंने उनके प्रश्नों का समाधान करने एवं विषय को समेटने का कार्य किया।

8. **गुजरात के जैविक खेती करनेवालों का भ्रमण** – दिनांक 16 मार्च 2021 को (भ्रमण का दिन) गुजरात के भाव नगर क्षेत्र के 50 ऐसे किसान जो जैविक खेती करते हैं ने संस्थान में अपनी बात रखी तथा राजस्थान के समस्याओं को समझा। उन्होंने राजस्थान गो सेवा संघ, दुर्गापुरा का भ्रमण कर गोपालन, जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, गो मूत्र से तैयार दवाओं को देखा और यहां के प्रयोग की जानकारी ली। संस्थान में चर्चा के दौरान बताया गया कि गुजरात से इस दिशा में निम्न कार्य किये जा रहे हैं – (1) जैविक उत्पादन की अलग मंडी की व्यवस्था है (2) कुछ क्षेत्र को जैविक क्षेत्र घोषित किया गया है जहां यूरिया एवं रासायनिक खाद नहीं इस्तेमाल किया जाता है (3) जैविक खेती करनेवाले किसान को

प्रति माह रू. 900 सहायता दी जाती है ताकि वे गोबर, गोमूत्र से खाद तैयार करें और दूध से आय बढ़ायें। उन्होंने बताया कि उत्पादन–बिक्री का अलग स्थान होने से हमारे उत्पाद को अधिक भाव मिलता है। गुजरात में सरकार की ओर से इस कार्य के लिए प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन दिया जाता है।

9. **<u>कोरोना काल में ग्राम पंचायत एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के योगदान का अध्ययन</u>** – अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के आर्थिक सहयोग से 3 माह में उक्त अध्ययन पूरा किया गया। इस अध्ययन में जयपुर और टोंक जिले के 5–5 ग्राम पंचायत के स्तर पर कोरोना काल में किये गये सेवा कार्य का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन अक्टूबर – दिसम्बर 2020 में किया गया। इस अध्ययन को पूरा कर के यूनिवर्सिटी को भेज दिया गया है। यूनिवर्सिटी ने अध्ययन को पूर्ण संतोषजनक माना और उसे स्वीकार कर लिया गया है। यह इस वर्ष का महत्वपूर्ण अध्ययन है।